Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

# सामाजिक सरोकार : मीडिया की दशा और दिशा

**डॉ.राम सिंह सैन***

* सहायक आचार्य (हिंदी) राजकीय महाविद्यालय, चौथ का बरवाड़ा, सवाई माधोपुर (राज.) भारत

**प्रस्तावना –** आज समाज में चारों ओर मीडिया के बदलते चरित्र के सम्बन्ध में चिन्ता प्रकट की जात है। विशेष रूप से पश्चिम का अनुकरण करने वाले अंग्रेजी मीडिया पर चिन्ता ज्यादा है। यह कहा जाता है कि स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में पत्रकारिता का जो मिशनरी चरित्र था आज उसका विलोपन हो गया है लेकिन इस बात को समझ लेना चाहिए कि उन दिनों सैकड़ों लोग पत्रकारिता के माध्यम से जन–जागरण, स्वतंत्रता की प्रबल आकांक्षा जाग्रत करने के अलावा हृदय को आंदोलित भी करते है। ऐसे सुधारकों और नेताओं में पहला नाम आता है राजाराम मोहनराय का। उन्होंने अंग्रेजी, बंगाली और फारसी की पत्रिकाएं निकाली। हरिश्चन्द मुखर्जी ने 'हिन्दू पैट्रिएट' के नाम से पत्रिका निकाली।

केशव कुमार सेन ने ' इण्डियन मिटर' नाम की पत्रिका निकाली। महर्षि अरविन्द ने 'वंदे मातरम्' प्रकाशित किया बालगंगाधर तिलक ने तो महाराष्ट्र में 'मराठा' और 'केसरी' नाम के दैनिक पत्रों से पत्रकारिता को एक नया संघर्षकारी स्वरूप प्रदान किया है। लाला लालपतराय की पत्रिका की भी वैसी ही धार थी। महात्मा गांधी की पत्रकारीय लेखनी 'यंग इण्डिया' 'नवजीवन' और 'हरिजन' के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करती रही।

यह सूची मात्र संकेतक है समग्र नहीं। वस्तुत: कई सौ समाज सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी मीडिया पत्रकारिता के माध्यम से समाज की दिशा को दिशा देने में अग्रसर रहे। सबका समान उद्देश्य था–भारतीय समाज की दशा को सुधारना और भारत को स्वतंत्र कराना। यह मिशन अपने आप में सबका साझा था।

धीरे–धीरे मीडिया की आचार संहिता और व्यवहार प्रणाली विकसित होती रही। पश्चिमी दुनिया के मीडिया का विशेष रूप से लोकतांत्रिक देशों की मीडिया की विकसित नैतिकता का भारत की पत्रकारिता पर भी प्रभाव पड़ता रहा है।

कई बार में आर्थिक दैनिकों को देखता है तो मुझे कुछ समाचारों और लेखों को पढ़कर लगता है कि आज जो नया मिशन है उसे बढ़ती हुई संख्या में पत्रकार उसी जज्बे से स्वीकार कर रहे ,जिस जज्बे से स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में स्वतंत्रता के उद्देश्यों को उठाया था।

यही सही है कि 'समय बदला गया है। मीडिया बदल गया है। लेकिन समाज की दशा और दिशा वही की वही है। इसमें होडा होडा चल रही है। अखबार बड़े शहर से छोटे शहरों में गए, छोटे शहरों से कस्बे में गए और अब दूर–दराज के गांवों में भी जाने लगे है। इलेक्ट्रानिक मीडिया का तो चमत्कारिक विकास हुआ है इसके बाद भी अखबारों की अपनी उपयोगिता है। मीडिया आज एक बड़ा बिजनेस बन गया है मीडिया की टेक्नोलोजी विकसित हो गई है। मीडिया संस्थान को चलाने के लिए ज्यादा बड़ी पूँजी की आवश्यकता होती है। बड़ी पूंजी, बड़ी वितरण संख्या बड़ी दर्शक संख्या मिलकर इस बिजनेस के व्यापारिक खतरों को बढ़ा दिया है। स्वाभाविक रूप से बिजनेश का उद्देश्य लाभ होता है। लाभ अर्जित करना अनैतिकता नहीं है।'

व्यापार में घाटा व्यापार की मौत की तरफ ही ले जाता है। घाटे के कारण बहुत से दैनिक पत्र और पत्रिकाएं बंद होती रही है। मीडिया अगर बिजनेस है, तो उसे लाभ कमाना पड़ेगा लेकिन क्या मीडिया परचूनी की दुकान या रसद सामग्री बेचने जैसा बिजनेस है? कोई भी मानेगा कि ये सारे व्यापार के तौर तरीके है। इनकी समाजिक जिम्मेदारिया अलग अलग है। आज मीडिया इतना शक्तिशाली है कि प्राय: सब सरकारें प्रशासनिक अधिकारी कार्यालय, पंचायत और अनेक योजनाओं की क्रियान्विति की शुरूआत मीडिया से ही होती हे। इसलिए सरकारें व प्रशासनिक अधिकारी भी मीडिया से डरते है। यह संसद और विधायिकाओं का कई बार ऐजेंडा तय करता है। सांसदों विधायकों ,राजनेताओं से इनका गहरा संबंध और नफरत का मिला–जुला रिश्ता रहता है। बड़ेबड़े उद्योगपति इससे घबराते है। कहा तो यहां तक जाता है कि आपके समाज का संचालन मीडिया ही करता है। सवाल यह खड़ा होता है कि मीडिया का संचालन कौन करता है। पश्चिम में विशेष रूप से अमेरिका में मीडिया का मालिकाना हक पूंजीपतियों के हाथ में केन्द्रित हो गया है इसी तरह भारत में अंग्रेजी मीडिया के पांच सात घराने, भाषाएं मीडिया के आठ–दस चैनल मालिकों के हाथ में करीब–करीब सारी मीडिया–शक्ति केन्द्रित हो गई है।

मीडिया के जो भाग इनके सीधे नियन्त्रण में नहीं है, वह भी उनसे प्रभावित होता है। कुल मिलाकर दर्जनभर संस्थाओं में कोई पांच–सात बुद्धिजीवी और प्रबंधक मीडिया को इस तरह चलाते है कि उनका व्यावसायिक हित हो इसीलिए वर्तमान में हम समाज में भी यही देखते है। कि परिवार की संस्था अधिक व्यवस्थावादी या वाचाल लोग ही सम्भाल लेते है। समझदार को पीछे की ओर धकेल दिया जाता है। उसकी प्रतिभा का दमन होता है मीडिया संस्थानों की एक खास बात है कि अर्थव्यवस्था पूरी तरह विज्ञापनों पर टिकी है। बड़े विज्ञापनदाता मीडिया को एक हद तक अपने इशारे पर नचाते है। बाजारी संस्कृति और बाजारी ताकते उसे अपनी ओर आकर्षित करती है। उससे उसका सामाजिक स्तर अपने दायित्व से दूर हटता

जाता है।'

इसी रस्साकशी और मीडिया की आंतरिक होड़ में मीडिया आज अनेक समस्याओं से ग्रस्त हो गया हैं विज्ञापन निर्भर करता है कि अखबारों की वितरण संख्या पर, विज्ञापन आयोजकों का हित इसमें है कि मीडिया अच्छी क्रय शक्ति वाले उपभोक्ताओं को विज्ञापनों के जरिए कैद करे और बाजार के हवाले करे। आज मीडिया समाज को सस्ती बाजारी संस्कृति को समाज में परोसने के लिए उतारू है जिससे वह समाज से आर्थिक लाभ प्राप्त कर सके। लेकिन यह बात अधिक समय तक नहीं चल सकेगी अति सबके लिए नुकसान दायक होती है। समाज की जब चेतना जागेंगी तो मीडिया को अंगीकार नहीं करेगा।

नकारात्मकता समाज को निराशा हताशा के गढ्ढो में धकेलती है अपने पेशे के दबाव में पत्रकार,मीडिया कर्मी, लेखक चित्रकार, व्यवस्थापक, कर्मचारी आदि अपने पेशे को बेचकर अपनी कमजोरी को उजागर करते है। अपने पेशे से दबाब में आकर विफलता की अपनी कमजोरी की खोज में रहता है। अखबारों में मीडिया में आने वाली पीढ़ी को अंधकार में डाल देने को उतारू है। इसी का दूसरा पक्ष मीडिया आदमी को आदमी से जोड़ने का कार्य भी करता है, उसमें कार्य करने की गति बढ़ती है संचार माध्यमों की बढ़ोतरी से कठिन कार्य भी सरल हो गये है। लेकिन कुछ समाज के समाज कंटक इस मजबूरी का गलत फायदा उठाकर नई पीढ़ी को अंधकार में रखकर आर्थिक लाभ उठाते हैं।

'आज मीडिया में जहां बड़ी–बड़ी खूबियां है वहां उसमें कई बड़ी खामियां भी है। ऐसे में कोई महान् उद्देश्य ही मीडिया को रास्ते पर लाने में शुरूआत कर सकता है। मैं यह मानता हूँ कि विकसित राष्ट्र का सपना ऐसा बड़ा साक्षा राष्ट्रीय लक्ष्य जरूर है जो बदली हुए व्यावसायिक मीडिया युग में भी नैतिक और उद्देश्य परक पत्रकारिता को आगे बढ़ा सकता है।' इस महान् राष्ट्रीय उद्देश्य में सचमुच बड़ी ताकत है यह विकसित राष्ट्र का मंत्र दरिद्रता का दर्शन नहीं है। यह विपुलता का दर्शन है यही से सफलता की सीढ़ी मिलती है। मीडिया संचारका आधार स्तम्भ है। समाज के प्रमुख अंगों में से एक अंग है। यही सम्पन्नता का दर्शन में समाज में देखता हूँ। निश्चित ही मीडिया और समाज की दिशा में सुधार की किरण नजर आयेगी। जिससे भावी पीढ़ी को संचार माध्यमों से जुड़ने में आने वाली समस्याओं और सस्ते साहित्य, बाजारू संस्कृति से निजात मिलेगी। मीडिया में सुधार करना मानव का परम उद्देश्य होना चाहिए जिससे आदर्श समाज का निर्माण हो सकेगा। मीडिया केवल आर्थिक रूप से विज्ञापनों और सस्ते साहित्य पर ही निर्भर रहेगा। उसमें साहित्य और समाज की समक्ष को पैदा कर मानवीय मूल्यों की रक्षा करने का दायित्व मीडिया को ही निभाना है। जिससे मीडिया ही समाज को सही दिशा दे सकता है। समाज की दशा को संसद, विधायक, कार्यपालिका न्यायपालिका तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाता है। समाज में अच्छे कार्य की समीक्षा ही मीडिया द्वारा होती है। जिसके माध्यम से मानवीय पीड़ा रूपी जागरण और भावी समस्याओं से संघर्ष करने की शक्ति भी मीडिया प्रदान करने में सक्षम है। जिससे भारतीय समाज और साहित्य को गहरी पहचान मिलेगी। आंशिक लाभ के खातिर मीडिया समाज को गहरे रसातल में भेजने को तैयार हो जाता है लेकिन समक्ष जब पैदा होती है तब आविष्कार का भाव बढ़ता है।

मीड़िया द्वारा समाज को अच्छाईयों के साथ बुराईयों का समाधान करते हुए अपनी अहम् भूमिका निभानी चाहिए। पूंजीपति, भ्रष्ट अधिकारी वर्ग के सामने अपनी छवि को बनाये करना चाहिए जिससे समाज पर बुरा प्रभाव न पड़े। मीडिया की गहरी पैठ जब सार्थकता को देती है तो भावी पीढ़ी का निर्माण करती हैं जिससे सभ्य समाज का निर्माण होगा।

'जब परिदृश्य ऐसा है तब क्या है? इस जमीन में मीड़िया ही फलेगी – फूलेगी इस अप–पत्रकारिता की संस्कृति के खिलाफ, सस्ते मीडिया, पूंजीपति वर्ग, आंशिक लाभ कमाने के लिए मीडिया को बाजारू बनाने वाले पूंजी पति वर्ग अधिकारी वर्गो के प्रति खिलाफ लड़ाई तभी संभव है जब इसमें शरीक हो पत्रकार, प्रबंधक राजनेता और समाज के दिग्गज लोग जो समाज को भावी दिशा देने के लिए आगे बढ़े है। पत्रकार भी प्रबंधक भी आगे बढ़ कर इसमें समाज का सहयोग प्रदान करें तो इस जंग को जीत जा सकती है।' क्या आज के इस माहौल में इस साझी जंग की उम्मीद की जा सकती हैं पर लोकतंत्र को दुरूस्त एवं सेहतमंद रखने के लिए यह जंग भी जरूरी है यही हम सबकी चुनौती है।

कार्य की दृष्टि से भी मीड़िया का स्वरूप बड़ी तेजी से बदल रहा है। समाचारपत्रों, लेखों संपादकीय स्पर्धा में इलेक्ट्रोनिक्स मीडिया से प्रतिद्धन्द्धिता ने समाचार संकलन की गति और आवश्यकता पहले से अधिक बढ़ा दी है जो मालिक यह कहता है कि समाचार तो कुछ अंश में होते है, वहीं मालिक सुबह की मीडिया द्वारा प्रसारित खबर देखकर कार्यालय पहुंच कर सवाल करता है। कि अमुक मीडिया चैनल, पत्र में खबर छपी है। हमारे मीडिया चैनल, पत्र में क्यों नहीं चली।

जबकि दूसरे मीडिया चैनल, पत्रिकाओं ने उसे प्रकाशित किया है। एक और समाचार की यह ललक और दूसरी और संपादक संरक्षण का एक षडयन्त्र के तहत अवमूल्यन इन दोनों स्थितियों के बीच पिस रहा है मीडिया जो मीडिया के लिए अभिशाप बन चुका है इस स्थिति से छुटकारा पाना की आसान काम नहींहै किन्तु अगर प्रेस की स्वतन्त्रता और लोकतंत्र को बरकरार रखना है। तो लोकतन्त्र के इस चतुर्थ स्तम्भ को गरिमापूर्ण बनाये रखना ही होगा। तभी मीडिया पर मंडरा रहे इस खतरे से बचा जा सकता है।

आधुनिक परम्परा का जहां एक तरफ विकास होना चाहिए था वहींउसका ह्रास भी हुआ हें व्यक्तिग संदर्भो में व्यक्ति नेअपने हितों की रक्षा के लिए समाज के सारे मूल्यों की बखिया उधेड़ दी है। साथ ही एक तरफ से उभरता हुआ अलगाव भी ऐसे ही पक्ष का पक्षकार है। जीवन मूल्यों की गाथा भी अपनी पहचान से दूर होती जा रहीहै। इसी बदलाव के बीच मीडिया की भूमिका को सही दिशा मिलनी चाहिए थी लेकिन उसका यहां पतन हो गया है। न तो मीडिया की अपनी दशा में ही सुधार हो पाया है न ही दिशा में इससे साफ झलकता है कि समूचे सांस्कृतिक और सामाजिक बदलावों को सही दिशा –दशा देने में मीडिया से भारी भूल हुई है।

आज की सबसे चुनौती यह है कि पूंजी, बाजार और प्रौद्योगिकी के वर्चस्व काल में मीडिया में सामाजिक सरोकारो को पुन: केन्द्र में कैसे लाया जाए? भारत की बहुलतावादी व लोकतांन्त्रिक विरासत को मीडिया में कैसे फौकस मिले। इस जवालों का सटीक जवाब एक तरफा नहीं दिया जा सकता समाज को भी आगे आना होगा। मीडिया की सोशल आडिटिंग करनी होगी जब तक मीडिया में सामाजिक जबावदेही को प्रतिबद्धता पैदा नहीं होगी तब तक प्रोफेशनलिज्म और आधुनिकीकरण के नाम मीडिया में फिसलने पैदा होती रहेगी। आज मीडिया की अंधानुकरण की प्रवृत्तियों व विकृतियों के प्रति सचेत और उन्हें दूर करने के लिए सामाजिक दबाव भी जरूरी है इसके लिए सिविल सोसायटी असरदार भूमिका निभा सकती है समाज विज्ञानी

समाजकर्मी पत्रकार कलाकार साहित्यकारों को इस चुनौती का सामना करना होगा।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**

1. राष्ट्रीय आन्दोलन और हिन्दी दैनिक पदमाकर पाण्डेय पृ.27
2. पत्रकारिता का बदलता चेहरा- महेश्वर दयालु गंगवार पृ.10
3. मीडिया अगर भ्रष्टाचार को रोकने का उपकरण -प्रभाव जोशी
4. भारतीय मीडिया का मिशन दीनाथ मिश्र -56 पृ.51
5. सत्य पर पर्दा डालते से स्तर गिरा केशव जैन केश पृ.20
6. समाचार पत्रों ने जगाई थी आजादी की अलख-योगेशचन्द शर्मा पृ.133

**********